

इतिहास का सबक

मौलाना वहीदुद्दीन खान

इतिहास का सबक

मौलाना वहीदुद्दीन खां

Itihas Ka Sabaq
by Maulana Wahiduddin Khan

First published 1994
Reprinted 2001

Distributed by
AL-RISALA BOOKS
1, Nizamuddin West Market
New Delhi 110 013
Tel. 435 5454, 435 6666, 435 1128
Fax 435 7333, 435 7980
E-mail: skhan@vsnl.com
Website: www.alrisala.org

अनुक्रम

खुदा का कलिमा उनके हक में पूरा होकर रहा	4
प्रतिकूल स्थितियों में अनुकूल संभावनाएं	6
जब इतिहास का रुख मोड़ दिया गया	8
यह कामयाबी योजना से हासिल की गयी	12
पीछे हटना भी महत्वपूर्ण कदम है	13
सोची समझी योजना का पुरजोश कदम	16
हमारी जिन्दगी का दर्दनाक पहलू	20
कदम उठाने से पहले शोध जरूरी है	21
मतभेद का नुकसान कहां तक	25
इतिहास पर छाया हुआ पारिवारिक अंगड़ा	26
दो ऐतिहासिक अनुभव	30
तातारी विद्रोह क्या था	36
संयुक्त मोर्चा की राजनीति	40
जब रचनात्मक राजनीति महत्वाकांक्षों में बदल जाती है	45
राजनीति के साथ मजहबी खिदमत संभव नहीं	48
राजनीतिक लोभ के बजाये राजनीतिक संतोष	50
इतिहास का एक सबक	53

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

उत्थान और पतन के ऐतिहासिक क़ानून को कुरआन में इस तरह ब्यान किया गया है: अल्लाह किसी ग़िरोह की 'स्थिति' उस वक़्त तक नहीं बदलता जब तक वह अपनी मनोवृत्ति न बदले 'अन्फ़ाल-५३, रा'द-११'.

इन आयतों में मनोवृत्ति में तब्दीली से मुराद वह परिवर्तन है, जो व्यक्तिगत सतह पर होती है. क्योंकि वृत्ति व्यक्तिगत सतह पर ही पायी जाती है, न कि सामूहिक स्तर पर. मतलब यह है कि कौमों का पतन उस वक़्त होता है, जबकि व्यक्ति-व्यक्ति के धरातल पर उनमें जीवन्तता पैदा हो जाए. इस सुन्नते इलाही के मुताबिक़ कौम के सुधार का तरीका यह है कि उस व्यक्ति में सुधार से शुरू किया जाये न कि हुकूमत में इंकलाब से. हुकूमत में इंकलाब के नारे से काम को शुरू करने का मतलब है स्थिति को स्थिति से बदलना. ज़ाहिर है कि इस प्रकार की कोशिश एक ऐसी दुनिया में नतीजाख़ेज़ नहीं हो सकती, जिसमें पैदा करने वाले ने उसकी स्थिति की तब्दीली को उसकी मनोवृत्ति की तब्दीली से जोड़ दिया हो. यह बाग़ को बीज से ही निकाला जा सकता है.

'इतिहास का सबसे बड़ा सबक़ यह है कि किसी ने इतिहास से सबक़ नहीं सीखा' - यह सुक्ति जिस तरह दूसरे समुदायों के लिये सही है ठीक उसी तरह वह हमारे ऊपर भी सादिक़ आता है. हमारा लंबा इतिहास हर तरह की शिक्षाप्रद घटनाओं से भरा हुआ है. मगर हममें से कोई व्यक्ति जब काम करने के लिये उठता है, तो वह इतिहास के क़ानून को जानते हुए अपने आप को चेतन या अचेतन रूप से उससे अलग कर लेता है. वह जानता है कि जो कुछ हुआ वह सिर्फ़ दूसरों के लिये था, हमारे साथ ऐसा नहीं होगा.

इतिहास निरंतर यह सबक़ देता रहा है कि कोई समुदाय या कौम उस वक़्त तक तरक्की नहीं कर सकता जब तक कि उसके लोगों में आचरण और चरित्र की शक्ति न पैदा हो जाये. मगर हमारा हाल यह है कि हम व्यक्ति में चरित्र पैदा किये बिना उत्थान की तरफ़ छलांग लगा देते हैं. तमाम इतिहासों का फ़ैसला है कि कौमों या समुदायों के उत्थान का राज़ प्रारंभिक सतह पर निर्माण और स्थिरता है. मगर लोग अवसर मिलते ही राजनीतिक संस्थाओं से मुकाबला शुरू कर देते हैं. इतिहास बताता है कि व्यक्ति-समुदाय के भीतर आपसी एकता, चाहे जिस कीमत पर हो बहाल रखना ज़रूरी है. मगर मामूली बातों पर लोग एक दूसरे के खिलाफ़ मोर्चाबंदी शुरू कर देते हैं. इतिहास बताता है कि व्यक्ति-समुदाय के भीतर आपसी एकता, चाहे जिस कीमत पर हो बहाल रखना ज़रूरी है. मगर हमारे रहनुमा बेदर्दी के साथ कौम को हंगामों में मशगूल कर देते हैं. मिल्लत को उठाने की योजना तभी कामयाब हो सकती है जब मिल्लत का व्यक्ति ऊपर उठाया जा

चुका हो। मिल्लत की तरक्की के लिये ऐसे लोग दरकार हैं, जो बोलने से ज्यादा चुप रहना जानते हों, जो शब्दों से ज्यादा अर्थ की भाषा समझते हों। जो शक्ति से ज्यादा तर्क और दलील के आगे झुकने वाले हों। जो कहने से ज्यादा करना जानते हों। जो आगे बढ़ने से ज्यादा पीछे हटने के बहादुर हों। संक्षेप में यह कि जो दुनिया से ज्यादा आखिरत को देख रहे हों। ऐसे लोगों के बिना मिल्लत की सिरबुलंदी का नारा लगाना ऐसा ही है, जैसे दलदल के ऊपर दीवार खड़ी करना।

खुदा का कलिमा उनके हक में पूरा होकर रहा

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम (१४००-१५२० ई० पूर्व) की आमद से साढ़े तीन हजार बरस पहले यह घटना हुई कि फिलिस्तीन और शाम के इलाके के स्थानीय सत्ताधारियों के कुछ 'अरब' जिनको 'अमालीक' कहा जाता था, मिस्र में दाखिल हुए, और वहां काबिज़ हो गये। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम (१७९६-१९०६ ई० पूर्व) जब नौजवानी की उम्र में मिस्र पहुँचे तो उस वक़्त मिस्र पर उनके इन्हीं हम कौमों की हुकूमत थी। एक महिला द्वारा पैदा की गयी कुछ प्रारंभिक मुश्किलों के बाद आपको मिस्र में बहुत लोकप्रियता मिली। आप एक शानदार व्यक्तित्व के मालिक थे और आपके अन्दर असाधारण प्रशासनिक और प्रबंध क्षमता थी। मिस्री हुकमरानों को नस्लवादी निकटता के कारण आपकी क्षमता को स्वीकारने में कोई रुकावट नहीं हुई। आपके ज़माने में अरब बादशाह अपोफेस ने आपके दीन 'धर्मास्था' को न स्वीकारते हुए भी तमाम कारोबार आपके सुपुर्द कर दिया। इसके बाद हज़रत युसुफ़ ने अपने पिता हज़रत याकूब (इस्त्राईल) और अन्य परिवार वालों को मिस्र बुला लिया। यह लोग तक्रीबन चार सौ साल तक मिस्र की हुकूमत पर छाये रहे। मिस्र के संवैधानिक हुकमरान हालांकि अब भी मुशिरक अमालीक (अरब निवासी काफिर) थे मगर हुकूमत पर व्यवहारिक कब्ज़ा इस्त्राईल की संतान का था।

इस्त्राईली सन्तान जब शुरू में मिस्र आये, तो उन्हें यहाँ की बहुत ही उपजाऊ ज़मीनों पर बसाया गया और सत्ता के महत्वपूर्ण पद उनके लिये ख़ास रहे। मगर यह बहुसंख्यक पर अल्पसंख्यकों की हुकूमत थी। बाइबल के बयान के मुताबिक़ याकूब का घराना 'इस्त्राईल' जब मिस्र स्थानांतरित हुआ, तो उनकी संख्या हज़रत युसुफ़ को मिला कर ६८ थी। नस्ल बढ़ती रही और इसी माध्यम से 'प्राचीन मुसलमानों' की संख्या में वृद्धि होती रही। यहाँ तक कि पाँच सौ वर्ष बाद जब हज़रत मूसा ने जनगणना कराई तो सिर्फ़ उनके पुरुषों की संख्या छह लाख से ज्यादा हो चुकी थी। हालांकि उस ज़माने की मिस्री आबादी की संख्या ठीक मालूम नहीं लेकिन एक अंदाजे के मुताबिक़ उनकी संख्या इस्त्राईली सन्तानों का दस प्रतिशत थी।

हज़रत यूसुफ़ ने ११० वर्ष की उम्र पाई। आपके तीन-चार सौ साल बाद

मिस्र में अरब हुकमरानों के खिलाफ प्रतिक्रिया हुई। लंबे खून-खराबे के बाद अंततः स्थानीय मिस्री जनता की सरकार बनी और बाहरी हुकमरानों को सत्ता से बेदखल कर दिया गया। जनता की नयी सरकार मिस्र के एक 'कबती' खानदान के कब्जे में थी जिसके हुकमरानों ने 'फिरऔन' का उपनाम अख्तियार किया।

कबती हुकूमत की स्थापना के बाद हालांकि ढाई लाख अरब निवासियों को मिस्र से निकाल दिया गया था, फिर भी इस्राइली संतान अब भी वहां रखे गये ताकि नये हुकमरानों के लिए बेगार का काम कर सकें। 'बाइबल' के शब्दों में: 'मिस्रियों ने खिदमत करने वालों में इस्राइलियों पर सख्ती की और उनसे गारा-ईट का काम और खेती करवा के उनकी ज़िन्दगी तल्लू की। उनकी सारी सेवा जो वे करते थे बड़ी मशक्कत की थी: - 'खरुज अलिफ: १३-१४'

हज़रत मूसा तशरीफ लाए तो इस्राइली उस समय उसी मशक्कत के दौर से गुज़र रहे थे। आपने कबती फिरऔनी सभ्यता के मुकाबले में वर्चस्व प्राप्त करने के बजाये खुद उनपर क़दम उठाने का तरीका अपनाया। आपने खुदावंद के 'दीन' धर्म अपनाने की दावत देनी शुरू की - 'तुम सब खुदावंद का दीन अपनाओ वरना तुम सबके सब तबाह कर दिये जाओगे।' यह चीज़ फिरऔन के गुस्से में सिर्फ वृद्धि कर सकती थी। इसी लिये इस्राइलियों के लिये आपके आने के बाद की ज़िन्दगी और तल्लू हो गयी। फिरऔन का गुस्सा इतना बढ़ा कि शाही हुकम के अनुसार मिस्र में इस्राइलियों के यहां पैदा होने वाले बेटों को क़त्ल किया जाने लगा, ताकि मिस्र से धीरे-धीरे उनकी नस्ल ही ख़त्म हो जाये। प्राचीन मिस्री पुरातत्व खुदाई के दौरान १८९६ में एक शिलालेख मिला है, जिसमें हज़रत मूसा के जमाने का फिरऔन की विजयी गर्वोक्ति है - 'और इस्राइल को मिटा दिया गया, उसका बीज तक बाकी नहीं।' उस वक़्त इस्राइलियों ने हज़रत मूसा से शिकायत की - 'आपके आने से पहले भी हम सत्ताये जा रहे थे और अब आपके आने के बाद भी सत्ताये जा रहे हैं' - 'आ'राफ़ - २७'.

इस इंतहाई नाज़ुक स्थिति में इस्राइलियों को जो जवाब दिया गया, वह कुरआन के शब्दों में यह है: - 'और हमने मूसा और उसके भाई की मदद की, कि तुम दोनों अपनी क़ौम को मिस्र में ठहराओ और अपने घरों को 'कार्यालय' बना लो और नमाज़ कायम करो और मोमिनीन को भविष्यवाणी कर दो - 'सूर: यूनुस - ८७'.

इस आयत में जो कार्यक्रम दिया गया है उसको निम्नलिखित अंदाज़ में बयान किया जा सकता है.

१. जहां हो, वहां जमे रहो. अपने अन्दर भय और बिखराव को जगह मत दो. यह वही चीज़ है, जिसे हज़रत मसीह 'ईसा' ने इन शब्दों में कहा था: 'जब

- तक सर्वोच्च दुनिया से तुम्हें शक्ति का लिबास न मिले इस शहर में ठहरे रहो. 'सूर: लौका २४:४७'.
२. अपने घर को अपनी गतिविधियों का केंद्र बना लो, यानी आपसी संगठन, अंदरूनी स्थिरता, आपस की सब-ओ-नसीहत और व्यक्तिगत माध्यमों पर निर्भरता. यह वह चीजें हैं, जिनपर तुम्हें मौजूदा स्थिति में अपना ध्यान केंद्रित रखना चाहिये.
 ३. नमाज़ कायम करो - यानी अल्लाह से अपने संबंध मजबूत करो, उसकी याद, उससे मांगना, उसके आगे अपने आप को बिल्कुल झुका देना 'आदि' इन विशेषताओं को ज्यादा अपने अन्दर पैदा करो.
 ४. यही वह क्रिया पद्धति है जिसमें तुम्हारे लिये दुनिया व आखिरत की तमाम खुश खबरियो छिपी हुई हैं. पूरी ध्यान केन्द्रियता के साथ इनको पूरा करने में लग जाओ. इस तीन सूत्रीय कार्यक्रम को संक्षिप्त रूप से इस तरह कहा जा सकता है - दृढ़ता, आंतरिक निर्माण, अल्लाह से संबंध. इस कार्यक्रम पर क्रियाशील रहने का नतीजा जो निकला वह कुरआन के शब्दों में यह है: 'और जो लोग कमजोर कर दिये गये थे, हमने उनको ज़मीन के पूरब-पश्चिम का बना दिया, जिसमें हमने बरकत दी है. और तुम्हारे रब का बेहतरीन कलिमा इस्लामी संतानों के लिये पूरा होकर रहा. और हमने फिरऔन और उसकी कौम को उसके उद्योगों और उसके खेत खलिहानों के साथ मिटा कर रख दिया. - 'सूर: आ'राफ़ - १३७'.

प्रतिकूल स्थितियों में अनुकूल संभावनाएँ

तत्त्व जब 'बर्बाद किया जाता है, तो वह ऊर्जा बन जाती है, जो तत्त्वों की व्यापक और शक्तिशाली शक्ल है. यही खुदा की इस कायनात का आम क़ानून है. यहां हर महरूमी के अन्दर हमेशा एक नयी 'क्रिया' की संभावना छिपी रहती है. अल्लाह तआला की यह ख़ास विशेषता, जिसकी अभिव्यक्ति भौतिक रूप में हुई, उसका वायदा ज़्यादा बड़े पैमाने पर अहले ईमान के लिये किया गया है. उनके लिये उनका 'रब' प्रतिकूल स्थितियों में भी अनुकूल पहलू पैदा कर देता है, बशर्ते कि वे वास्तव में खुदा के हो चुके हों. उनकी योजनाबंदी ख़ालिस खुदाई मिशन के लिये हो न कि आपको ज़ाहिर या अभिव्यक्त करने के लिये.

मक्का में जब मुसलमानों के हालात सज़ा हो गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

लाख (१८६९३०) मुशिरकों ने इस्लाम कुबूल किया। उनमें से बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो समाजी जिंदगी में नुमायां मुकाम रखते हैं।' यह शब्द नाइजेरिया के भूतपूर्व प्रधानमंत्री अहमद वबलू (१९०१-१९६६) के शब्द हैं जो उन्होंने (१३८४ हि०) में १९६४ में काहिरा के इस्लामी कन्वेंशन में भाषण करते हुए कहे थे। उन्होंने कहा कि अफ्रीका को तकरीबन २२ करोड़ आबादी में दस करोड़ ८० लाख मुसलमान हैं। 'अगर मुस्लिम देशों की मदद मिल जाये तो अफ्रीका के मुशिरक कबीलों में तेजी से इस्लाम फैल सकता है और इसका प्रमाण खुद मेरी वह कामयाबियाँ हैं जिनका मैंने अभी हवाला दिया.'

अहमद वबलू को इस्लाम की खिदमत का यह जज्बा अपने दादा उसमान दान फोडियो से मिला था। १९वर्षी सदी में जब पुर्तगाल, फ्रांस और बरतानिया ने अफ्रीकी इलाकों में घुसना शुरू किया तो अफ्रीका में उसकी प्रतिक्रिया के तहत बहुत से हथियार बंद लोग उठ खड़े हुए, उन्हीं में से एक उसमान दान फोडियो भी थे। उन्होंने पिछली सदी में मुसलमानों में सुघार के लिये परमाणु शक्तियों के खिलाफ ज़बर्दस्त आंदोलन चलाया। इस आंदोलन को जिहाद आंदोलन के नाम से जाना जाता है। दरिया-ए-नाइजेरिया के किनारे-किनारे दूर तक उन्होंने इस्लाम का झंडा लहरा दिया। १८३३ में उनके निधन के बाद उनके उत्तराधिकारियों ने यह मुहिम जारी रखी। नाइजेरिया की राजधानी लागौस से लेकर उत्तर में लकोसो नहर तक मुक़ाबले जारी थे। हालांकि आखिरी फैसला अंग्रेजों के हक़ में हुआ। उन्होंने १८८६ में सुल्तान मुहम्मद ताहिर और उनके साथियों को पराजित कर उनके देश पर कब्ज़ा कर लिया।

अहमद वबलू उन्हीं परंपराओं के बीच वर्तमान सदी के प्रारंभ की पैदावार थे। उनके बाप सुकोतो फोडियो बिन उसमान वान फोडियो कबीले के अमीर थे अभी वह दस वर्ष के ही थे कि पिता का निधन हो गया। उनकी मां एक दीनदार ख़ातून थीं। प्राचीन रिवाज के मुताबिक़ पहले उन्हें कुरआन हिफ़ज़ (याद) कराया गया। उसके बाद उन्होंने अरबी मदरसे में दाख़िला लिया और २१ साल की उम्र तक दीनी तालीम से फुर्सत पा ली। १९२६ में पश्चिमी शिक्षा के लिये कास्तीना कालिज में दाख़िल हुए तथा अंग्रेजी भाषा और गणित की शिक्षा पूरी की। ख़ानदानी विरासत के तहत उन्हें सुकोतो कबीले का अमीर बनाया गया। १९३४ में सुल्तान हसन ने उनको रिबाह शहर का गवर्नर नियुक्त किया।

१९३८ में जब सुल्तान हसन की मौत हुई तो नये सुल्तान अबु बकर ने अहमद वबलू को सुकोतो प्रदेश के 'सारदोना' पद पर नियुक्त किया। १९४८ में वे लंदन की यात्रा पर गये और आज़ादी के मसले पर हुकूमत-ए-बरतानिया से बातचीत की।

१९६३ की जनगणना के मुताबिक़ नाइजेरिया में ३६ मीलियन (३ करोड़

६० लाख) मुसलमान हैं। ईसाई १९ मीलियन और दूसरी जाति के कबीले बाले १० मीलियन। उत्तरी नाइजेरिया के इलाके में ज्यादातर मुसलमान ही आबाद हैं और दक्षिण नाइजेरिया में ज्यादातर ईसाई। अहमद वबलू उत्तरी नाइजेरिया के लीडर थे। वह पश्चिमवाद के खिलाफ हमेशा आगे-आगे रहे। १९६० में नाइजेरिया आजाद हुआ तो वहां एक संघीय सरकार बनी। उस हुकूमत के संघीय प्रधानमंत्री सर अबु बकर तफा वाब्ल्यो (१९१२-१९६६) थे। अहमद वबलू उत्तरी नाइजेरिया के प्रधानमंत्री नियुक्त हुए। यह एक मिली जुली सरकार थी। जिसमें विभिन्न पार्टियों के नुमाइन्दे शामिल थे। अहमद वबलू ने मुसलमानों के सुधार और ईसाइयों में इस्लामी प्रचार का काम पूरी गंभीरता से शुरू किया। नतीजा अच्छा निकला मगर वे ज्यादा काम न कर सके। १५ जनवरी, १९६६ को २५ फौजी अफसरों ने मिलकर बगावत कर दी। इस बगावत में अबु बकर तफा वाब्ल्यो, अहमद वबलू और बहुत से मुसलमानों के साथ ईसाई भी मारे गए। इसके बाद नाइजेरिया में फौजी हुकूमत कायम हुई। जिसके नेता जनरल अरविन्सी थे। मगर उन्हें भी सिर्फ छह महीने ही हुकूमत करने का मौका मिला। २९ जूलाई १९६६ को दूसरी फौजी बगावत हुई जिसमें उन्हें भी मौत के घाट उतार दिया गया।

नाइजेरिया दो मसले प्रमुख हैं। मुसलमानों की संख्या ७० प्रतिशत है। मगर शिक्षा, अर्थ और सांगठनिक मामलों में पिछड़े होने के कारण व्यवहारिक रूप से ईसाई ही हर विभाग में छाये हुए हैं। ज़रूरत है कि उन्हें शिक्षा और अर्थ के मामले में ऊंचा उठाया जाये, ताकि वे मुल्क में अपना जायज़ मुकाम पा सकें।

दूसरा काम यहां के ईसाइयों और १० मीलियन (१ करोड़) साझे कबीलों में इस्लाम का प्रसार हो। यह दोनों काम अहमद वबलू ने शुरू कर दिया था। मगर उनकी शहादत से जो सबक मिलता है वह यह है कि रचनात्मकता व तबलीग का काम राजनीति को साथ लेकर नहीं किया जा सकता। अहमद वबलू अगर सियासत से अलग होकर यह काम कर रहे होते तो वह २०-२५ वर्षों में नाइजेरिया का इतिहास बदल देते। मगर राजनीति के कांटेदार माहौल ने उन्हें भी ख़त्म कर दिया और उनके सामुदायिक और इस्लामी काम को भी रोक दिया।

राजनीतिक लोभ के बजाये राजनीतिक संतोष

कोई मर्द औरत अपनी औलाद को स्वीकार करने से इन्कार नहीं कर सकते। सही राजनीति का मामला भी है। किसी के लिये संभव नहीं कि वह अपने पैदा किये हुए राजनीतिक हालात के तार्किक नतीजों से इन्कार कर दे। ऐसी हर कोशिश हमेशा उलटी पड़ती है और सिर्फ वंचित करने में वृद्धि का कारण बनती है। इसे पाकिस्तान की मिसाल से समझिये।

पाकिस्तान विभाजन के नारे पर बना. मुसलमानों की तरफ से 'सीधे ऐक्शन' की नौबत आ जाने के बाद अंततः यह आंदोलन कामयाब हुआ और दूसरे पक्ष ने इस माँग को मान लिया कि आबादी की बुनियाद पर मुल्क को तर्कसिद्ध कर दिया जाए. मगर १९४६ में जब विभाजन की सरहदें तय करने का वक्त आया तो पाकिस्तानी लीडरों को नज़र आया कि विभाजन के उसूल के मुताबिक 'जूनागढ़' और 'हैदराबाद' जैसी मुस्लिम रियासतें उनके हाथ से निकल रही हैं. अब उन्होंने कोशिश की कि ऐसी रियासतों के मामले में विलयन के सिद्धांत को भ्रम में बांधकर रखा जाये. वह समझते थे कि इस तरह वह बयक वक्त कश्मीर पर भी कब्जा कर लेंगे और हैदराबाद पर भी. कश्मीर को इस तर्क पर कि वहां की आबादी में मुसलमानों की संख्या बहुत है. हैदराबाद को इस लिये कि वहां का हुकमरान मुसलमान है. मगर यह खुद अपने द्वारा पैदा किये हुए हालात के तार्किक नतीजों से इन्कार करने जैसा था. चुनांचे इसका अंजाम उल्टा हुआ. दो खरगोशों के पीछे दौड़ने की कोशिश में पाकिस्तान एक को भी न पकड़ सका.

पाकिस्तान बना तो वह दो ऐसे अलग-अलग हिस्सों पर आधारित था, जिनमें से एक पूर्वी हिस्सा स्पष्ट तौर पर दूसरे के मुकाबले में संख्या के आधार पर बहुसंख्यक था. बंगाली नेता हुसैन शहीद सहरवरदी की कोशिशों से पाकिस्तान के पूर्व दोनों हिस्सों में राजनीतिक समता (Parity) कायम हो गई. राष्ट्रपति अय्यूब खां की बुनियादी जम्हूरियत में यह समता एक मुस्लिम राजनीतिक उसूल के तौर पर बाकी रही. इसी के मुताबिक पूर्वी हिस्से के ४० और पश्चिमी हिस्से के ४० हजार नुमाइदे वोटर मुल्क की हुकूमत का फैसला करते थे. मगर पाकिस्तान के रहनुमा इस व्यवस्था के खिलाफ हो गए उन्हें राष्ट्रपति अय्यूब को रास्ते से हटाना था और इसकी सबसे आसान तदबीर यह थी कि अवाम को यह कह कर उनके खिलाफ भड़का दिया जाए कि बुनियादी जम्हूरियत कायम करके उन्होंने अवाम के राजनीतिक अधिकारों को ग़सब (दबा) कर रखा है. अब पाकिस्तान में जम्हूरियत आंदोलन चलाया गया. बेपनाह नुक्सान के बाद अंततः आंदोलन कामयाब हुआ. राष्ट्रपति अय्यूब और उनकी बुनियादी जम्हूरियत दोनों का खात्मा हो गया.

१९७० में पाकिस्तान का पहला आम चुनाव हुआ, जिसमें हर बालिग (व्यस्क) को वोट देने का अधिकार हासिल था. पूर्वी पाकिस्तान (बंगलादेश) की आबादी चुंकि ज्यादा थी, उसके प्रतिनिधियों की संख्या केंद्रीय संसद में ज्यादा हो गई, जो ५५ प्रतिशत थी. समता या बराबरी खत्म हो गई और बंगलादेश ने पाकिस्तान पर राजनीतिक वर्चस्व प्राप्त कर लिया.

अब पाकिस्तान के रहनुमा चीख उठे. उन्होंने जम्हूरियत के विवाद को यह समझ कर उठाया था कि वह खुद उन्हें सत्ता तक पहुंचाने की सीढ़ी बनेगी, न

कि इस लिये कि बंगलादेश के सेकुलर लीडर इसको इस्तेमाल करके पाकिस्तान की सत्ता पर क़ाबिज़ हो जाएंगे, उन्होंने चाहा कि जम्हूरियत को दुबारा 'प्रतिबंधित लोकतंत्र' के रूप में लागू करें और पूर्वी और पश्चिमी हिस्से में बराबरी के प्रतिनिधित्व का उसूल कायम करें, जैसा कि पहले कायम था। मगर अवामी जम्हूरियत को ज़िंदा करने के बाद इस तरह की कोशिश खुद के पैदा किये हुए हालात से भागने की तरह था। बंगलादेश अवामी मतदान के तहत मिली हुई राजनीतिक वर्चस्व शक्ति को छोड़ नहीं सकता था। जम्हूरी तर्क के तहत जन्में नतीजों ने नये मसले खड़े किये, दोनों हिस्सों में कश्मकश बढ़ती चली गयी। यहां तक कि पाकिस्तान दो टुकड़े हो गया।

१९७८ में यह अनुभव एक नयी शक्त में दुहराया गया। पाकिस्तान के दूसरे आम चुनाव (१९७७) में भुट्टो पार्टी को कामयाबी हासिल हुई। विपक्ष के लिये यह राजनीतिक महरूमी असह्य थी। उसने चुनाव के नतीजों को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। उसने नारा लगाया कि भुट्टो पार्टी धांधली से चुनाव जीती है। वरना पाकिस्तानी अवाम की ७७ प्रतिशत अकसरियत हमारे साथ है। उन्होंने 'दुबारा चुनाव कराओ' के नाम पर पाकिस्तानी शहरों में हंगामा शुरू कर दिया। इस स्थिति का फ़ायदा उठाकर फौजी अप्सरों ने बगावत कर दी और हुकूमत पर क़ब्ज़ा कर लिया। अवाम को इत्मिनान दिलाने के लिए फौजी लीडर जनरल मुहम्मद ज़ियाउल हक़ ने ऐलान कर दिया कि वह सिर्फ़ रेफ़री के तौर पर संसद में दाख़िल हुए हैं और बहुत जल्द साफ़ सुथरा चुनाव कराया जायेगा।

पाकिस्तान राष्ट्रीय एकता के लीडर खुश हो गये और १९७७ को 'यौमुलफ़तह' (जनता की विजय) क़रार दिया मगर भुट्टो पार्टी के जलसों में अवामी भीड़ ने बताया कि भुट्टो के सत्ता से हटाये जाने के बावजूद अवाम आज भी उसी के साथ है और यदि चुनाव हुआ तो भुट्टो पार्टी ही दुबारा सत्ता में आयेगी। जिस जम्हूरियत को लाने के लिये पाकिस्तानी रहनुमाओं ने चौथाई सदी खर्च कर दी थी वह जब आई तो मालूम हुआ कि वह सारी की सारी भुट्टो जैसे लोगों के क़ब्जे में चली गई। उनको महसूस हुआ कि मसला सिर्फ़ जम्हूरी या लोकतांत्रिक चुनाव का नहीं है बल्कि चुनावी मसलों की मुसीबत और उनसे संभावित भयानक नतीजों का भी है। अब उन्होंने अपने नारे बदल दिये। उन्होंने कहना शुरू किया कि - 'जम्हूरियत को जला डालो, लोगों की आज़ादियां छीन लो। 'उमर' का कोड़ा हरकत में लाओ।' (फैसलआबाद के मिम्बर से - ३, अक्टूबर १९७८). यही पाकिस्तान के तमाम भुट्टो विरोधी रहनुमाओं की मानसिकता है। कोई इस बात को दूसरे शब्दों में कह रहा है, कोई ख़ूबसूरत शब्दों में। मगर स्पष्ट है कि इस तरह की राजनीति खुद अपने पैदा किये हुए हालात के नतीजों को कुबूल न करने का परिणाम है।

जब पाकिस्तान में अवामी जम्हूरियत को ज़िन्दा किया गया है तो अब यह संभव नहीं कि उसके तार्किक नतीजे बरामद होने से रोके जा सकें. पाकिस्तानी नेताओं की यह राजनीति बेशक उनके लिये बहुत महंगी पड़ेगी. 'निज़ाम-ए-मुस्तुफा' और 'नज़रिया-ए-पाकिस्तान' जैसे शब्द बोल कर इस सैलाब को रोका नहीं जा सकता.

इस तरह की गुलती बार-बार क्यों होती है. इसका कारण राजनीतिक द्वेष और राजनीतिक लोभ है. हमारे रहनुमा सिर्फ़ इतने पर संतोष करने के लिये तैयार नहीं हैं, जो वास्तविक हालात के ऐतिबार से उन्हें मिल सकता है. उनकी इस कमज़ोरी ने उन्हें अयथार्थवादी बना दिया है. वे ऐसे कदम उठाते हैं, जिन्हें निभाने की ताकत उनमें नहीं होती. इस्लामी शिक्षा के मुताबिक़ अगर वह लोभ के बजाये संतोष का तरीक़ा अपनाएं तो वह ज़्यादा बड़ी और वास्तविक कामयाबी हासिल करें और क़ौम को भी नये-नये मसलों में फंसाने से बच जाएं (२३, अक्टूबर १९७८).

इतिहास का एक सबक़

तुर्की पूरब और पश्चिम का संगम है. इस लिये पश्चिमी सभ्यता से टकराव का मसला सबसे पहले यहीं पेश आया. मगर उसके जवाब में क्या हुआ. एक तरफ़ प्राचीन उलेमा का गिरोह था जो पश्चिम की तरफ़ से आने वाली हर चीज़ का उतना बड़ा विरोधी था कि सुल्तान सलीम सालिस (१७८९-१८०७) और उसके उत्तराधिकारी सुल्तान महमूद (१८०८-१८३९) के नये फौजी संगठन और उन आधुनिक संशोधनों तक का विरोध किया जो उन्होंने तुर्की को रक्षा और शिक्षा के लिहाज़ से उभरती हुई युरोपीय शक्तियों के काँधे के बराबर ले चलने के लिये लागू किये थे.

दूसरी तरफ़ तुर्की की वह नयी नस्ल थी जो पेरिस, बर्लिन और लंदन के विश्वविद्यालयों में शिक्षा लेकर आई थी, वह तुर्की को पश्चिमी रंग में रंग देना चाहती थी. उनकी उग्र भावना की स्थिति यह थी कि उन्होंने पश्चिमी अनुकरण लागू करने के लिये एक पूरा दर्शन गढ़ डाला. ज़िया गौक अलिप ने कहा: 'पश्चिमी सभ्यता दरअसल रोम की सभ्यता का विस्तार है. उस तहज़ीब (जिसे हम संपूर्ण तामन महाद्वीप के दर्शन की सभ्यता कहते हैं) के संस्थापक समारी, सेथी, फ़नीकी, रियाथ सब तुर्की नस्ल से संबंध रखते थे.

इतिहास में पुराने ज़मानों से पहले एक 'तुरानी काल' का अस्तित्व मिलता है. इस लिये कि मध्य एशिया के प्राचीन निवासी हमारे पूर्वज थे. इसके बाद मुसलमान तुर्कों ने इस तहज़ीब का विकास किया और इसे युरोप तक पहुंचाया, फिर पश्चिमी और पूर्वी सल्तनत रूमा के ख़ात्मे के बाद तुर्कों ने युरोप के इतिहास में इन्क़लाब पैदा किया और इसी बुनियाद पर हम पश्चिमी सभ्यता का अंश हैं और हमारा

इसमें हिस्सा है।'

उनकी चिंतनधारा यह थी कि वह अपने दिमाग से काम लेकर अपने को पश्चिम की ऊंची और प्रकाशमान तहजीब में गाड़ लें (इरफ़ान ओरगा, अतातुर्क - २९७). कमाल अतातुर्क (१८८१-१९३८) जब १९२४ में तुर्की लोकतंत्र के पहले राष्ट्रपति नियुक्त हुए तो उनके नज़दीक जो सबसे महत्वपूर्ण काम था वह यह कि तुर्कों को पश्चिम का लिबास पहना दें. उन्होंने पर्दे को क़ानून विरोधी करार दिया. अरबी अक्षर की जगह लातीनी अक्षर जारी किया. अरबी में 'आज़ान' पर प्रतिबंध लग गया. हैट का हस्तेमाल आवश्यक करार दे दिया गया. यहां तक कि जब एक रक्त क्रांति के बाद हैट की जंग जीत ली गई तो मुस्तुफ़ा कमाल अतातुर्क ने मक्का की इस्लामी कांफ़्रेंस (१९२७) में शिरकत के लिये तुर्क संसद के एक सदस्य अदीब सरवत को भी हैट पहनाकर रवाना किया, जो इस्लामी कांफ़्रेंस में सबसे अलग नज़र आए.

यही मिसाल हर मुस्लिम देश में पेश आई है. उनमें डिग्री का फ़र्क तो हो सकता है, मगर परिप्रेक्ष्य का कोई अंतर नहीं. हर जगह यही हुआ कि प्राचीन मज़हबी तबक़े ने पश्चिम से नफ़रत और अलगाव में जिंदगी का राज़ बताया और आधुनिकतम शिक्षित वर्ग ने पश्चिम के अनुकरण से यह उम्मीद की कि वह दुबारा इस से ऊंचाइयों पर पहुंच जायेंगे. मगर यह मिसाल कहीं नज़र नहीं आती कि कुछ लोग शिद्दत से इस पहलू की तरफ़ क़ौम को आकृष्ट कर रहे हों कि शक्ति के इस राज़ को मालूम करो जिससे हथियारबद्ध होकर पश्चिम तुम्हारे और पूरी दुनिया पर छाता चला जा रहा है.

तुर्की का यह इतिहास एक समृद्ध उदाहरण है, जो बताता है कि मौजूदा ज़माने में मुस्लिम देश किस तरह हालात का अंदाज़ा करने में नाकाम रहे हैं और कभी भी समय के अनुसार अपने काम की योजनाएं न बना सके. इसी के साथ तुर्की के इतिहास में दो और प्रतिकात्मक उदाहरण भी हैं. मिल्ली कार्यों के लिये जानदार कार्यकर्ताओं का अभाव और बिना तैयारी के क़दम उठाना.

आधुनिक तुर्की में दो व्यक्तित्व ज्ञानी और चिंतक की हैसियत से बहुत ही स्पष्ट और उभरे हुए नज़र आते हैं. एक नामिक कमाल (१८४०-१८८८) दूसरे ज़िया ग़ौक अलिप (१८७५-१९२४). दोनों ने ऊंची शिक्षा प्राप्त की. दोनों तुर्की के अलावा अरबी और फ़्रेंच भाषाएं जानते थे. उन्नीसवीं सदी की मुस्लिम दुनिया की दूसरी तमाम शख़्सियतों की तरह हालांकि यह दोनों ही राजनीति से प्रभावी थे और राजनीतिक इन्क़लाब को सबसे बड़ा काम समझते थे. लेकिन दोनों में यह फ़र्क था कि नामिक कमाल तटस्थ और संतुलित चिंतनधारा के आदमी थे, व्यवहारिक राजनीति से प्रभावित होने के बावजूद इस्लामी उसूलों के अनुसार सोचते

थे और 'तुर्क एकता' के बजाये 'इस्लामी एकता' के शब्द बोलते थे. उसपर यह कि नामिक कमाल को नयी नस्ल में प्रसिद्धी और लोकप्रियता भी मिली. ख़ालिदा अदीब ख़ानम ने उनके बारे में लिखा है: 'नामिक कमाल आधुनिक तुर्की के लोकप्रिय व्यक्ति थे. तुर्की की चिंतनधारा और राजनीति के इतिहास में उनसे ज़्यादा किसी दूसरे व्यक्ति की पूजा नहीं की गई.' (Halde Edib, Turkey Faces West, P-84).

दूसरी तरफ़ ज़िया ग़ौक अलिप एक आज़ाद ख़याल व्यक्ति थे. उनकी चिंतन धारा में इस्लामी बुनियादी तत्त्व की हैसियत नहीं रखता था. उसने निमंत्रण दिया था कि तुर्की का नवनिर्माण ख़ालिस राष्ट्रीय और भौतिक आधारों पर किया जाये. वह इस्लामी तहज़ीब के बजाये पश्चिमी तहज़ीब का पुरजोश झंडाबरदार था.

तुर्की के बाद के इतिहास में कहा गया है कि यहां — 'नामिक कमाल जैसे लोगों को तुर्की में वर्चस्व नहीं मिला. बल्कि ज़िया ग़ौक अलिप जैसे लोग व्यवहारिक रूप से देश की राजनीति और वहां वे नेतृत्व पर छा गए. दूसरी कम से कम एक बड़ी वजह यह थी कि ज़िया ग़ौक अलिप की चिंतनधारा की असली जामा पहनाने में लिये कमाल अतातुर्क (१८८१-१९२४) जैसा ताक़तवर और मज़बूत इरादे का आदमी मिल गया था.

इसके अलावा एक वजह और भी है कि नामिक कमाल ने अगरचे अपनी क़ौम के एक तबके में लोकप्रियता हासिल की, लेकिन अपने लिखित साहित्य में वह जिन विचारों को पैदा कर रहे थे वह चाहे पारंपरिक लोगों के लिये जितनी दिलचस्पी का कारण हो, नयी चिंतनधारा के आलमी सैलाब में उसकी हैसियत एक रूमानी ख़्वाब की थी. उसूलों तौर पर बेशक यह दुस्त है कि इस्लाम को बुनियादी तौर पर संगठनिक प्रबंधों का आधार होना चाहिये. मगर एक ऐसी दुनिया में जहां व्यवहारिक तौर पर सेकुलर चिंतन धारा का वर्चस्व हो, कोई व्यक्ति अपना पृथक द्वीप नहीं बना सकता. यह तभी संभव है, जब कि साधारण और अवामी चिंतनधारा को उसके अनुकूल बना लिया जाये.

ख़ुदा की योजना में ख़ुद को शामिल करने का नाम : संघर्ष

हिंदुस्तान में पश्चिमी क़ौमों के लिये दाख़िले का रास्ता सबसे पहले वास्कोडिगामा (१४६०-१५२४) ने पैदा किया. उसके बाद पुर्तगाली और फ़्रांसीसी क़ौमों इस देश के तटवर्तीय क्षेत्रों में दाख़िल हुई. आख़िर में अंग्रेज़ आए और डेढ़ सौ बरस के अंदर उन्होंने पूरे उपमहाद्वीप पर क़ब्ज़ा कर लिया. हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, बर्मा, तिब्बत, नेपाल सब अंग्रेज़ के झंडे के नीचे आ गये. हिन्दुस्तान पर अपने क़ब्ज़े को स्थिर बनाने के लिये उन्होंने स्विज़ नहर

पर कब्जा किया, और उसके बेहतर हिस्से महंगी कीमत पर ख़रीद लिये.

अंग्रेजों ने न सिर्फ़ हिन्दुस्तान की राजनीति और आदमी पर कब्जा किया बल्कि यहां की सरकारी भाषा बदल दी. शिक्षा व्यवस्था ऐसी बनाई जिससे ऐसी नस्ल पैदा हो जो लॉर्ड मैकाले के शब्दों में 'पैदाइशी तौर पर हिन्दुस्तानी और वैचारिक ऐतिबार से अंग्रेज़ हों.' ईसाई मिशनरियों ने हुकूमत की मदद से फ़ायदा उठाकर पूरे मुल्क को ईसाई बनाने का काम शुरू कर दिया. इस तरह ऐसी हुकूमत, जो इतनी ज़्यादा व्यापक थी कि उसकी 'सल्तनत में सूरज डूबता नहीं था.' अपने तमाम साधनों और सांस्कृतिक शक्ति के साथ मुल्क पर छा गई और अपनी सत्ता को स्थायी बनाने के लिये वह सब कुछ किया जो इस भौतिक और विकसित दुनिया में कोई कर सकता है.

मगर अगस्त १९४७ का इन्क़लाब बताता है कि बात वहीं ख़त्म नहीं हो जाती जहां कोई अपने तौर पर उसे ख़त्म समझ लेता है. कोई कौम चाहे जितने बड़े पैमाने पर दूसरी कौम के ऊपर वर्चस्व प्राप्त कर ले. फिर भी कुछ ऐसे गोशे बाकी रहते हैं, जहां से संघर्ष करके दबी हुई कौम दुबारा नयी ज़िंदगी हासिल कर ले. फिर इसी इन्क़लाब के इतिहास से पता चलता है कि यह काम महज झुंझलाहट के साथ टकराने से संभव नहीं था. इसके लिये ज़रूरत रही है कि हालात को गहराई के साथ समझा जाये और प्रतिद्वंदी के उस नाजुक गोशे को तलाश किया जाये जहां से प्रभावी संघर्ष को प्रारंभ किया जा सकता है — खुदा ने अपनी दुनिया को इस ढंग पर बनाया है कि यहा हर बार गिरने के बाद उसके बंदों के लिये दुबारा उभरने की एक नयी संभावना बाकी रहे. मगर यह संभावना उसी के लिये घटना बनती है जो अपने आप को खुदाई योजना के साथ हम आहंग (एकमेक) कर लेने को तैयार हो. जो अपनी खुद की बनाई हुई राहों पर दौड़ना शुरू करदे उसके लिये खुदा की इस दुनिया में स्थायी बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं.

घड़ी की सुई बज़ाहिर जहां सबसे ज़्यादा करीब नज़र आती है, वह उसका शीशा है. लेकिन घड़ी की सुई घुमाने के लिये कोई शख्स उसके शीशे पर ज़ोर आजमाई नहीं करता बल्कि उसकी चाभी पर अपना हाथ ले जाता है. मगर कैसी अजीब बात है कि मिल्लत के मसलों को हल करने के लिये हमारे तमाम लीडर 'घड़ी' के शीशे पर ज़ोर आजमाई कर रहे हैं. चाहे इसके नतीजे में ग़लत तरीके से शीशा ही क्यों न टूट जाए या कोई दूसरी समस्या क्यों न पैदा हो जाए.

Goodword Books

Islam Rediscovered	The Spread of Islam in France	Words of the Prophet Muhammad
Tell Me About the Prophet Muhammad	The Islamic Art and Architecture	An Islamic Treasury of Virtues
Tell Me About the Prophet Musa	The Islamic Art of Persia	Islam and Peace
Tell Me About Hajj	The Hadith for Beginners	Introducing Islam
Life Begins: Quran Stories for Little Hearts (PB)	How Greek Science Passed to Arabs	The Moral Vision
The Ark of Nuh ﷺ: Quran Stories for Little Hearts (HB)	Islamic Thought and its Place in History	Principles of Islam
The Ark of Nuh ﷺ: Quran Stories for Little Hearts (PB)	One Religion	Indian Muslims
The Origin of Life (Colouring Book)	Muhammad: The Hero As Prophet	God Arises
The Ark of Nuh and the Animals (Colouring Book)	A History of Arabian Music	Islam: The Voice of Human Nature
The Ark of Nuh and the Great Flood (Sticker Book)	A History of Arabic Literature	Islam: Creator of the Modern Age
Arabic-English Dictionary for Advanced Learners (PB)	The Qur'an for Astronomy	Woman Between Islam and Western Society
The Spread of Islam in the World	Ever Thought About the Truth?	Woman in Islamic Shari'ah
A Handbook of Muslim Belief	Crude Understanding of Disbelief	Islam As It Is
The Muslims in Spain	The Miracle in the Ant	Religion and Science
The Moriscos of Spain	The Miracle in the Immune System	Tabligh Movement
The Story of Islamic Spain	Allah is Known Through Reason	The Soul of the Quran
Spanish Islam (A History of the Muslims in Spain)	The Basic Concepts in the Quran	Presenting the Quran
A Simple Guide to Muslim Prayer	The Moral Values of the Quran	The Wonderful Universe of Allah
A Simple Guide to Islam	The Beautiful Commands of Allah	The Quran
A Simple Guide to Islam's Contribution to Science	The Beautiful Promises of Allah	Selections from the Noble Reading
The Quran, Bible and Science	The Muslim Prayer Encyclopaedia	The Koran
Islamic Medicine	After Death, Life!	Heart of the Koran
Islam and the Divine Comedy	Living Islam: Treading the Path of Ideal	Muhammad: A Mercy to all the Nations
Travels of Ibn Jubayr	A Basic Dictionary of Islam	The Sayings of Muhammad
The Arabs in History	The Muslim Marriage Guide	The Life of the Prophet Muhammad
Decisive Moments in the History of Islam	A Treasury of the Quran	History of the Prophet Muhammad
My Discovery of Islam	The Quran for All Humanity	A-Z Steps to Leadership
Islam At the Crossroads	The Quran: An Abiding Wonder	The Essential Arabic
	The Call of the Qur'an	Hijab in Islam
	Muhammad: A Prophet for All Humanity	The Way to Find God
		The Teachings of Islam
		The Good Life
		The Garden of Paradise
		The Fire of Hell
		Islam and the Modern Man